दैनिक जागरण
Copyright © 2014 Jagran Prakashan Limited.

अब मोबाइल एप से कीजिए बाजार में ट्रेडिंग

आमने-सामने

बी गोपकुमार
सीईओ, ब्रोकिंग एंड डिस्ट्रीब्यूशन
रिलायंस कैपिटल

● बाजार में ट्रेडिंग के लिए इतने अधिक प्लेटफॉर्म हैं। फिर रिलायंस सिक्योरिटी के प्लेटफॉर्म की जरूरत क्यों ?

–हमने दो उत्पाद लांच किए हैं। टिक और टिक प्रो। टिक वेब ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म है। इसे सामान्य कारोबारियों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है और यह हमारे ब्रोकिंग मॉडल के आधार पर काम करता है। जबकि टिक प्रो मोबाइल प्लेटफॉर्म है। यह देश का पहला मोबाइल एप है जिस पर केवल डेरिवेटिव्स में कारोबार किया जा सकता है। हमें लगता है कि बाजार में इसकी काफी अधिक संभावनाएं हैं।

जहां तक मोबाइल ट्रेडिंग का सवाल है, भारत में

● ऐसे डेरिवेटिव मार्केट का आकार कितना बड़ा है ?

–बीएसई पर रोजाना लगभग 1.2 लाख करोड़ रुपये का वॉल्यूम होता है। इसका करीब 94 फीसद हिस्सा डेरिवेटिव्स या वायदा कारोबार से आता है। इसका मतलब हुआ कि करीब एक लाख करोड़ रुपये का रोजाना कारोबार इस वर्ग में होता है। इसका करीब 60 फीसद यानी 60,000 करोड़ रुपये का कारोबार ऑनलाइन होता है। नकद कारोबार का हिस्सा केवल छह फीसद है। आप वायदा कारोबार के विस्तार का अंदाज इसी बात से लगा सकते हैं कि बीते सात साल में यह 150 फीसद बढ़ा है। जबकि नकद कारोबार में इस अवधि में केवल 50 फीसद की वृद्धि हुई है।

जहां तक मोबाइल ट्रेडिंग का प्रश्न है, तो बीते एक साल में मोबाइल से होने वाली ट्रेडिंग की हिस्सेदारी 0.5 फीसद से बढ़कर 1.2 फीसद हो गई है। पहले जहां रोजाना मोबाइल ट्रेडिंग से 600 करोड़ रुपये का कारोबार होता था, आज वह करीब 1600 करोड़ रुपये पर पहुंच गया है। मोबाइल से होने वाली ट्रेडिंग में 90 फीसद हिस्सेदारी वायदा कारोबार की रहती है।

● आने वाले वर्षों में आप इस रुख को किस तरह बढ़ता हुए देखते हैं ?

–देखिए, बीते एक साल में मोबाइल कारोबारियों की संख्या छह लाख से बढ़कर नौ लाख हो गई है। इस तरह इसमें 50 फीसद की वृद्धि हुई। हमारा मानना है कि आने वाले दो-तीन वर्ष में कुल कारोबार में मोबाइल ट्रेडिंग की हिस्सेदारी तीन से चार प्रतिशत हो जाएगी। इसमें 90 फीसद से अधिक हिस्सा वायदा कारोबार से आएगा। अगर सब कुछ हमारे अनुमान के हिसाब से हुआ तो अगले दो तीन साल में यह 6000 करोड़ रुपये का बाजार हो जाएगा जो अगले पांच साल तक बढ़कर 10000 करोड़ रुपये तक पहुंच सकता है।

● इतनी तेज वृद्धि की क्या वजह है ?

–सबसे पहली बात तो यह है कि इसमें नए नए वायदा कांट्रैक्ट जुड़ेंगे। साथ ही बाजार में कारोबार के समय में भी विस्तार हो रहा है। इसके अलावा कमोडिटी मार्केट में भी ऑप्शंस शुरू करने की दिशा में नियम बन रहे हैं। ये कुछ प्रमुख वजहें हैं जिनके चलते हम मानते हैं कि वायदा कारोबार का आने वाले समय में तेज विस्तार होगा। इसके अलावा प्रौद्योगिकी के मोर्चे पर वायदा कारोबार में मोबाइल एप के जरिये होने वाली ट्रेडिंग के विकल्प भी कारोबारियों की संख्या और वॉल्यूम बढ़ाने में मदद करेंगे।

● रिलायंस सिक्योरिटी को इस बाजार में कितनी हिस्सेदारी की उम्मीद है ?

–इस सेगमेंट में हम अपनी ग्रोथ किसी एक नंबर तक सीमित करके नहीं रखना चाहते। लेकिन हमारी उम्मीद है कि इस मोबाइल एप और डेडिकेटेड प्लेटफॉर्म के जरिये हम वायदा कारोबार के बाजार में अपनी हिस्सेदारी को तीस फीसद तक पहुंचा लेंगे। हमारी कोशिश है कि वायदा कारोबार को अपने कारोबारियों के लिए हम इस प्लेटफॉर्म पर ज्यादा से ज्यादा सरल बना सकें। जहां तक मोबाइल एप पर वायदा कारोबार का प्रश्न है, हमारा मानना है कि इस मामले में हम सबसे बड़े ब्रोकर के तौर पर उभरेंगे।

● अगले तीन साल में आपके कुल कारोबार में मोबाइल एप के जरिये आने वाले कारोबार का कितना हिस्सा होगा ?

–हम उम्मीद कर रहे हैं कि हमारे कुल ब्रोकिंग कारोबार में मोबाइल एप की हिस्सेदारी 30 फीसद हो जाएगी। यही वजह है कि हम प्रौद्योगिकी पर बहुत अधिक निवेश कर रहे हैं। इसमें हम रोबो एनालिटिक्स और बिग डाटा की मदद ले रहे हैं। इससे ट्रेडिंग कॉल के जरिये मोबाइल एप से कारोबार करने में आसानी होगी।